

कृत्रिम व अकृत्रिम चैत्यालयों के अर्घ (हिन्दी)

भूत भविष्यत् वर्तमान की तीस चौबीसी मैं ध्याऊँ ।
चैत्य चैत्यालय कृत्रिमाकृत्रिम, तीन लोक के मन लाऊँ ॥
ॐ ह्रीं त्रैलोक्य सम्बन्धी तीस चौबीसी, त्रिलोक सम्बन्धी कृत्रिमाकृत्रिम
चैत्याचैत्यालयेभ्य अर्घ्य नि.

वसुकोटि छप्पन लाख ऊपर, सहस सत्याणव मानिये ।
शतच्यार पै गिनले इक्यासी, भवन जिनवर जानिये ॥
तिहुँलोक भीतर सासते, सुर असुर नर पूजा करें ।
तिन भवन को हम अर्घ लेकै, पूजि है जग दुःख हरै ॥
ॐ ह्रीं त्रैलोक्य सम्बन्ध्यष्टकोटि-षट्पंचाशल्लक्ष-सप्तनवतिसहस्र चतु
शतैकाशीति अकृत्रिम-जिन चैत्यालयेभ्यो पूर्णार्घ्य नि. ॥४॥

चैत्य भक्ति आलोचना चाहूँ, कायोत्सर्ग अघ नासन हेत ।
कृत्रिमाकृत्रिम तीन लोक में, राजत हैं जिन बिंब अनेक ॥
चतुर्निकाय के देव जजैं, ले अष्ट द्रव्य निज कुटुम्ब समेत ।
निज शक्ति अनुसार जजूं मैं, कर समाधि पाऊँ शिवखेत ॥

पुण्यांजलि क्षेपण

पूर्व मध्य अपरान्ह की बेला, पूर्वाचार्यों के अनुसार ।
देव वन्दना करूँ भाव से, सकल कर्म की नासनहार ॥
पंच महा गुरु सुमिरन करके, कायोत्सर्ग करूँ सुखकार ।
सहज स्वभाव शुद्ध लख अपना, जाऊँगा मैं अब भव पार ॥
(कायोत्सर्ग पूर्वक नौ बार णमोकार मंत्र की जाप्य करें।)

दरबार तुम्हारा मनहर है, प्रभु दर्शन कर हर्षिये हैं ।
दरबार तुम्हारे आये हैं, दरबार तुम्हारे आये हैं ॥टेक॥
भक्ति करेंगे चित से तुम्हारी, तृप्त भी होगी चाह हमारी ।
भाव रहें नित उत्तम ऐसे, घट के पट में लाये हैं ॥दरबार. ॥१॥
जिसने चिंतन किया तुम्हारा, मिला उसे संतोष सहारा ।
शरणे जो भी आये हैं, निज आत्म को लख पाये हैं ॥दरबार. ॥२॥
विनय यही है प्रभू हमारी, आत्म की महके फुलवारी ।
अनुगामी हो तुम पद पावन, 'वृद्धि' चरण सिर नाये हैं ॥दरबार. ॥३॥